साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 17 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 22 अप्रैल 2026 से 28 अप्रैल 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

पृथ्वी दिवस 2026 -हमारी शक्ति, हमारा ग्रह बचाने का संकल्प

नई दिल्ली 22 अप्रैल का दिन अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसे विश्वभर में पृथ्वी दिवस (अर्थ डे) के रूप में मनाया जाता है। यह केवल पृथ्वी पर चर्चा का दिन नहीं, बल्कि धरती को प्लास्टिक प्रदूषण से बचाने, वृक्षारोपण करने, जल संरक्षण अपनाने तथा टिकाऊ जीवनशैली को बढ़ावा देने का संकल्प दिवस है।बहुत से पाठक शायद यह नहीं जानते होंगे कि विश्व में दो बार पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। एक आयोजन संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रत्येक वर्ष मार्च विषुव के अवसर पर किया जाता है, जबकि 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस अधिक लोकप्रिय, व्यापक और वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त है।इस दिवस की शुरुआत अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने वर्ष 1970 में की थी। वहीं अर्थ डे नाम देने का श्रेय जूलियन कोनिग को जाता है। उन्होंने यह नाम इसलिए चुना क्योंकि अर्थ डे शब्द जन्मदिन(बर्थडे) से तुकबंदी करता है, और संयोगवश 22 अप्रैल उनका जन्मदिन भी था।22 अप्रैल की तिथि भी सोच-समझकर चुनी गई थी।

आयोजकों का उद्देश्य था कि कॉलेजों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में इसमें भाग लें। उस समय अमेरिका में यह दिन स्प्रिंग ब्रेक और अंतिम परीक्षाओं के बीच आता था, जब विद्यार्थी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय और उपलब्ध रहते थे।वर्ष 1970 में जब पहला पृथ्वी दिवस मनाया गया, तब लगभग 2 करोड़ लोग सड़कों पर उतर आए थे। इसे पर्यावरण समर्थन का अब तक का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण जनआंदोलन माना जाता है। यही आंदोलन आगे चलकर वैश्विक पर्यावरण चेतना का आधार बना।पृथ्वी दिवस का एक आधिकारिक ध्वज भी है, जिसे इको-फ्लैग कहा जाता है। इसे वर्ष 1969 में रॉन कोब ने तैयार किया था। इसमें गहरे हरे रंग की पृष्ठभूमि पर पीले रंग का प्रतीक अंकित है, जो अंग्रेजी अक्षर इ (एनवायरनमेंट) और ओ (आर्गेनिज्म) के संयोजन का प्रतीक माना जाता है।इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण जलवायु समझौता पेरिस समझौता भी 22 अप्रैल 2016 अर्थात पृथ्वी दिवस के दिन हस्ताक्षर हेतु खोला गया था। 170 से अधिक देशों ने इस पर हस्ताक्षर किए, जिससे यह वैश्विक पर्यावरण इतिहास की महत्वपूर्ण घटना बन गया। समय-समय पर पृथ्वी संरक्षण के लिए अनेक आंदोलन हुए हैं। इन आंदोलनों का प्रभाव इतना व्यापक रहा कि इक्वाडोर और बोलीविया जैसे देशों ने अपने संविधान में प्रकृति को कानूनी अधिकार प्रदान किए। अर्थात वहाँ प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि संरक्षित अधिकारों वाली इकाई मानी जाती है।गौरतलब है कि वर्ष 2026 में विश्व के प्रमुख पर्यावरण संगठनों में से एक द नेचर कंजर्वेंसी अपनी स्थापना की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है। इस अवसर पर पृथ्वी दिवस के साथ मिलकर विश्वभर में प्राकृतिक आवासों के पुनर्जीवन हेतु बड़े स्तर पर अभियान चलाए जा रहे हैं। जानकारी के अनुसार, इस वर्ष पहली बार पृथ्वी दिवस कार्यक्रमों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) और नेक्स्ट जेनरेशन सैटेलाइट्स का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। ये उपग्रह जंगलों की कटाई, समुद्र के बढ़ते जलस्तर तथा जलवायु परिवर्तन जैसे पर्यावरणीय परिवर्तनों का रियल-टाइम डेटा उपलब्ध करा रहे हैं, जिससे आम नागरिक भी अपने मोबाइल पर अपने क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिति देख सकते हैं।वर्ष 2026 के आयोजनों में भारत का मिशन लाइफ वैश्विक चर्चा का विषय बना हुआ है। भारत सौर ऊर्जा की बढ़ती क्षमता तथा इंटरनेशनल सोलर एलायंस के माध्यम से विश्व को प्रकृति-अनुकूल जीवनशैली अपनाने का संदेश दे रहा है।ताज़ा वैज्ञानिक रिपोर्टों के अनुसार 2025 से 2029 तक का समय अब तक का सबसे गर्म काल रहने की आशंका है। इसलिए 2026 का पृथ्वी दिवस केवल उत्सव नहीं, बल्कि एक आपातकालीन चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें 1.5एष्ट तापमान लक्ष्य को बचाने की अपील की जा रही है।

पृथ्वी दिवस केवल जागरूकता कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि इसके प्रभाव से अमेरिका में क्लीन एयर एक्ट, क्लीन वाटर एक्ट, और एनडेंजर्ड स्पेशीज एक्ट जैसे कठोर कानून लागू हुए, जिन्होंने वैश्विक पर्यावरण नीतियों की दिशा तय की।आज हमारी पृथ्वी, जिसे नीला ग्रह भी कहा जाता है, जल, वायु, ध्वनि, मृदा तथा प्लास्टिक प्रदूषण जैसी अनेक समस्याओं से जूझ रही है। विश्व की लगातार बढ़ती जनसंख्या, अंधाधुंध औद्योगिकीकरण, वनों की अविवेकपूर्ण कटाई, जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन पृथ्वी के संतुलन और पारिस्थितिकी तंत्र को बिगाड़ रहा है।ग्लोबल वार्मिंग के कारण ध्रुवीय बर्फ पिघल रही है, समुद्र स्तर बढ़ रहा है और संपूर्ण जीव-जगत संकट की ओर बढ़ रहा है। ऐसे समय में पृथ्वी दिवस का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

पृथ्वी दिवस की थीम प्रत्येक वर्ष नई दिशा देती है। वर्ष 2026 की थीम है- अवर पावर,अवर प्लेनेट (हमारी शक्ति, हमारा ग्रह)। वास्तव में, इस थीम का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत और सामुदायिक शक्ति को रेखांकित करना है। यह हमें याद दिलाती है कि पर्यावरण की रक्षा केवल सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी और छोटे-छोटे सकारात्मक बदलाव ही वास्तविक परिवर्तन ला सकते हैं। वर्ष 2026 का अभियान नागरिक एकजुटता और लोकतांत्रिक कार्रवाई पर केंद्रित है। यह थीम बताती है कि पृथ्वी को बचाने की सामूहिक शक्ति हम सभी के पास है।यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व वर्ष 2024 की थीम प्लेनेट वर्सेज प्लास्टिक थी, जिसका उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण के विरुद्ध वैश्विक चेतना जगाना था। वहीं वर्ष 2022 और वर्ष 2023 की थीम इनवेस्ट इन अवर प्लेनेट(हमारे ग्रह में निवेश करें) थी।

हाल फिलहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि हमारी भारतीय सनातन संस्कृति में पृथ्वी को माता माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है-माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अर्थात पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। वास्तव में हमारी सनातन परंपराएं व संस्कृति हमें यह सिखाती है कि पृथ्वी केवल भूमि नहीं, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति है। अतः हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे धरती मां के मर्म को चोट पहुँचे। अधिकाधिक वृक्षारोपण, जल संरक्षण, ऊर्जा की बचत, प्लास्टिक का त्याग, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशील जीवनशैली अपनाना आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। वास्तव में, 22 अप्रैल का यह दिन हमें स्मरण कराता है कि हम सभी पृथ्वी माता की संतान हैं, और इसकी रक्षा करना केवल हमारा दायित्व ही नहीं, बल्कि नैतिक धर्म भी है। पृथ्वी और इसके पर्यावरण का संरक्षण किसी एक देश या संस्था का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की साझा जिम्मेदारी है।

पृथ्वी पर पानी कहां से आया

पृथ्वी पर पानी कहां से आया, यह एक बहुत बड़ा अनसुलझा रहस्य है। पानी के स्रोतों का पता लगाने के लिए तमाम तरह के अनुसंधानों और अटकलों के बावजूद वैज्ञानिक यह बताने की स्थिति में नहीं है कि पृथ्वी को पानी आखिर कहां से मिला। अभी तक यह माना जा रहा था कि हमारे ग्रह को पानी धूमकेतुओं के सौजन्य से प्राप्त हुआ है। लेकिन पिछले दिनों यूरोपियन स्पेस एजेंसी के रोजेटा अंतरिक्षयान से मिली नई जानकारी के बाद वैज्ञानिक पानी के स्रोत के बारे में अपनी धारणा बदलने को मजबूर हुए हैं। अब उनका कहना है कि पृथ्वी पर पानी धूमकेतुओं के बजाय क्षुद्रग्रहों ने पहुंचाया है। धूमकेतु हमारे सौरमंडल के अत्यंत प्राचीन निर्माण खंड हैं। वैज्ञानिकों का खयाल है कि इन्हीं मटमैले बर्फीले पिंडों ने जीवन के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण कार्बनिक यौगिकों को पृथ्वी पर पहुंचाया था। रोजेटा अंतरिक्षयान ने कॉमेट 67 पी, सी–जी की संरचना के बारे में नई जानकारी भेजी है। इस जानकारी के विश्लेषण से वैज्ञानिकों को सौरमंडल और पृथ्वी के विकास में इन आवारा बर्फीले पिंडों की भूमिका को बेहतर ढंग से समझनेमें मदद मिल रही है। उल्लेखनीय है कि रोजेटा यान पिछले अगस्त में किसी धूमकेतु का चक्कर लगाने वाला पहला अंतरिक्ष यान बन गया था। नवंबर में इस यान के फायली लैंडर ने धूमकेतु की सतह पर उत्तर कर पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों को आश्चर्य चकित कर दिया था। रोजेटा अब वैज्ञानिकों को पृथ्वी के पानी के रहस्य को सुलझाने में मदद कर रहा है। अगस्त में धूमकेतु की परिक्रमा शुरू करने से पहले रोजेटा धूमकेतु के आसपास मौजूद गैसों की रासायनिक संरचना के विश्लेषण के लिए रोजिना नामक उपकरण का इस्तेमाल किया। वैज्ञानिको ने इस उपकरण से प्राप्त पानी से संबंधित डेटा पर अपना ध्यान केंद्रित किया ताकि इस बात का खुलासा किया जा सके कि पृथ्वी के समुद्रों को क्षुद्रग्रहों ने पानी पहुंचाया या धूमकेतुओं ने। पृथ्वी के जन्म को समझने के लिए बनाए गए मॉडलों से पता चलता है कि 4.6 अरब वर्ष पहले अपने गठन के तुरंत बाद पृथ्वी बहुत गर्म थी। अत: वैज्ञानिकों के मुताबिक इस बात की संभावना बहुत कम है कि ग्रह की सतह पर इस वक्त मौजूद पानी उसके जन्म काल से ही है। इस संबंध में पिछले अध्ययनों से संकेत मिला था कि पृथ्वी के गठन के करीब 80 करोड़ वर्ष बाद ब्रह्मांडीय प्रहारों के हिंसक दौर में पानी हमारे ग्रह पर पहुंचा। धरती पर आधे के अधिक पानी सौर प्रणाली से भी पुराना है, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन खगोलविदों का सिद्धांत है।साइंस के ताजा अंक में प्रकाशित शोधकर्ताओं का काम हमारे ग्रह और सौर मंडल के पानी के गठन के बारे में एक बहस सेटल करने में मदद करता है। शोधकर्ताओं के लिए यह सवाल अनुत्तरित है कि सूर्य को घेरे प्रोटोप्लानेटरी डिस्क (सौर निहारिका–इसी से ग्रहों की उत्पत्ति मानी जाती है ष्इंटरस्टेलर आइस ष् में सूर्य के अभिभावकीय ग्रह और तारों के बीच मौजूद हाइड्रोजन घनत्व से जन्मा या इस घनत्व में हुई रासायनिक क्रियाओं से उत्पन्न हुआ।30 से 50 प्रतिशत आणविक बादल से आया, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन में डॉक्टरेट की छात्र इल्स क्लीव्स कहती हैं। इसके अनुसार पानी सौर प्रणाली की तुलना में लगभग एक लाख साल पुराना हैं।उन्होंने पानी के दो अलग किस्मों के पर फोकस किया – सामान्य प्रकार के और भारी संस्करण। धूमकेतु और पृथ्वी के महासागर में विशेष अनुपात में – सूरज से अधिक – भारी पानी हैं। ष् रसायन विज्ञान के अनुसार पृथ्वी को बहुत ठंडे स्रोत से पानी प्राप्त हुआ जो शून्य से 10 डिग्री से ऊपर था। सूरज ने ;जो काफी गरम है,द्ध इस ड्यूटेरियम, या भारी पानी के फिंगरप्रिंट को मिटा दिया, बरगीन के अनुसार .सौर प्रणाली के सिमुलेशन को शुरू करने के लिए, वैज्ञानिकों ने घड़ी को वापस घुमा कर भारी पानी को खाली का दिया। फिर बटन दबा कर यह देखने की कोशिश की कि क्या पृथ्वी और धूमकेतु में पानी का अनुपात कैसा हैं। क्लीव्स के अनुसार, हम केमिस्ट्री को एक लाख साल विकसित होने दिया – यह ग्रह के गठन डिस्क बनने का समय हैं – और पाया कि डिस्क की रासायनिक प्रक्रियाओं सौर प्रणाली में भारी पानी बनाने में अक्षम थी। ष्इसका तात्पर्य यह हैं कि अगर ग्रहों के डिस्क ने पानी नहीं बनाया तो यह विरासत में मिला। सौर प्रणाली का कुछ पानी सूरज से पहले मौजूद था।ष्पृथ्वी पर जीवन पानी पर निर्भर करता है। पानी का अनुमान लगाने से वैज्ञानिकों को आकाशगंगा भर में पानी कितना आम हैं समझने में मदद मिलेगी। क्लीव्स के अनुसार ष् यह निष्कर्ष बहुत रोमांचक हैं,ष् अगर पानी का गठन हर तारकीय सिस्टम में स्थानीय प्रक्रिया से होता है। तो जीवन के गठन के लिए आवश्यक पानी और अन्य महत्वपूर्ण रासायनिक अवयवों की मात्रा हर प्रणाली के लिए भिन्न हो सकती है। बरगीन के अनुसार, सिमुलेशन और खगोलीय समझ के आधार पर हाइड्रोजन और ऑक्सीजन परमाणुओं से पानी का गठन तारकीय जन्म के प्रारंभिक दौर का एक सर्वव्यापी घटक है। यह पानी शून्य से केवल 10 डिग्री पर स्टार के जन्म से पहले बना हैं।थ्वी सूरज से तीसरा ग्रह है और यूनिवर्स में जीवन वाली अकेली जानी–मानी एस्ट्रोनॉमिकल चीज़ है। लगभग 4.5 अरब साल पहले बना यह एक टेरेस्ट्रियल ग्रह है, जिसका मतलब है कि इसकी सतह गैस वाली नहीं बल्कि ठोस, चट्टानी है। पृथ्वी की खासियत है इसके लिक्विड पानी के महासागर ङ्क जो इसकी सतह का 71प्रतिशत हिस्सा कवर करते हैं ङ्क सांस लेने लायक ऑक्सीजन–नाइट्रोजन वाला माहौल, और डायनामिक जियोलॉजिकल एक्टिविटी होता है।

उत्कृष्ट गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से रोशन हो रहा प्रदेश का भविष्य –मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बोर्ड परीक्षा हम सभी के जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव होती है। बोर्ड परीक्षा के परिणाम ही हमारे भविष्य की दिशा तय करते हैं। मध्यप्रदेश में दी जा रही उत्कृष्ट शिक्षा से हमारे विद्यार्थियों का भविष्य दिनों दिन रौशन हो रहा है। मुख्यमंत्री डा. यादव ने बुधवार को संवाद भवन (मुख्यमंत्री निवास) में माध्यमिक शिक्षा मंडल, भोपाल द्वारा ली गई कक्षा 10वीं, 12वीं एवं विद्यालय पूर्व शिक्षा में डिप्लोमा (डीपीएसई) मुख्य परीक्षा- 2026 के परिणाम घोषित किए।

वर्ष 2026 में कक्षा 10वीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम 73.42 प्रतिशत एवं कक्षा 12वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम 76.01 प्रतिशत रहा। शासकीय स्कूलों के विद्यार्थियों ने इस बार अपना ही रिकॉर्ड तोड़ दिया है। कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम इस बार बीते 16 वर्षों में सर्वश्रेष्ठ रहा है। पिछले वर्ष भी शासकीय स्कूलों के विद्यार्थियों ने ही बोर्ड परीक्षा में कीर्तिमान गढ़ा था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने शासकीय विद्यालयों में शिक्षा व्यवस्था को बेहतर किया है, जिससे हमारे शासकीय स्कूल 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा में निजी स्कूलों के परिणामों से आगे निकल रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि फरवरी से मार्च के बीच कक्षा 10वीं की परीक्षा हुई, जिसमें 8 लाख 97 हजार विद्यार्थी शामिल हुए। हाईस्कूल परीक्षा में 73.42 प्रतिशत विद्यार्थियों को सफलता मिली है। परीक्षा में सम्मिलित होने वाले 69.31 प्रतिशत छात्र और 77.52 प्रतिशत छात्राएं उत्तीर्ण हुई हैं। शासकीय स्कूलों का परीक्षा परिणाम 76.80 प्रतिशत और प्राइवेट स्कूलों का 68.84 प्रतिशत रहा है। दोनों में 8 प्रतिशत का अंतर है। यह सांदीपनि विद्यालयों के अनुकूल वातावरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था का परिणाम है। हाईस्कूल की मेरिट में 378 विद्यार्थियों ने अपना स्थान बनाया है, जिसमें 235 छात्राएं और 143 छात्र हैं। प्राइवेट स्कूलों में भी हमारी बेटियों ने ही बेटों से अधिक अंक हासिल किए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय जिले अनूपपुर के 93.85 प्रतिशत विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा में सफलता मिली है। अनूपपुर जिला सबसे आगे रहा है। अलीराजपुर जिला 92.14 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर रहा है। हाईस्कूल परीक्षा में पन्ना जिले के सरस्वती ज्ञान मंदिर हाई स्कूल, गुनौर की छात्रा कु. प्रतिभा सिंह सोलंकी ने प्रथम स्थान हासिल किया है। इन्हें कुल 500 परीक्षांक में से 499 अंक मिले हैं।

पानी बचाना हमारी जरूरत भी है और जिम्मेदारी भी -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

'जल गंगा संवर्धन अभियान' से प्रदेश में जल संरक्षण को मिली नई गति राष्ट्रीय स्तर पर तीसरे स्थान पर पहुंचा मध्यप्रदेश

भोपाल (एजेंसी)मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में जल संरक्षण को जन-आंदोलन बनाया जा रहा है। पानी बचाना बेहद जरूरी है। यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी है, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियां प्रकृति के इस अनमोल वरदान से कभी भी कमी महसूस नहीं करें। इसके लिए हमें अपने वर्तमान जल स्त्रोतों के साथ सूख चुके जल स्त्रोतों को संरक्षित करना ही होगा। उन्होंने कहा कि पानी बचाने के लिए प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। सरकार और समाज के साझा प्रयासों से हो रहे इस अभियान में बीते एक माह में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के सभी नागरिकों से इस अभियान में सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया है।

प्रदेश में संचालित 'जल गंगा संवर्धन अभियान' ने अल्प समय में ही उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। विगत 19 मार्च 2026 से प्रारंभ हुआ यह अभियान जल संरक्षण, जल संरचनाओं के संवर्धन और जनभागीदारी का एक व्यापक जन-आंदोलन बनता जा रहा है। इस अभियान के प्रभाव से ही मध्यप्रदेश राष्ट्रीय स्तर पर अपनी रैंकिंग सुधारकर अब तीसरे स्थान पर आ गया है। अभियान से पहले मध्यप्रदेश नेशनल रैंकिंग में छठवें स्थान पर था। राज्य सरकार द्वारा आगामी 30 जून तक चलाए जा रहे इस अभियान में 16 विभागों की 58 गतिविधियां नियत की गई हैं। इसके लिए लगभग 6 हजार 278 करोड़ रुपये का वित्तीय लक्ष्य तय किया गया है। इस अभियान में कुल 2 लाख 44 हजार से अधिक जल संरक्षण एवं संवर्धन कार्यों को चिन्हित कर लगभग 6 हजार 236 करोड़ रुपये की लागत से विकास कार्यों का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

अभियान की मॉनिटरिंग एकीकृत डैश बोर्ड से

आयुक्त, मनरेगा ने बताया कि अभियान की एक ही प्लेटफार्म पर नियमित मॉनिटरिंग के लिए एक एकीकृत डैश बोर्ड तैयार किया गया है, जिससे सभी विभाग अपनी-अपनी विभागीय गतिविधियों की प्रगति दर्ज कर रहे हैं। इस डैश बोर्ड से जिलेवार रैंकिंग भी सुनिश्चित की जा रही है। इस डैश बोर्ड से प्रशासनिक एवं विभागीय पारदर्शिता और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा मिल रहा है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। अभियान अंतर्गत 39 हज़ार 977 खेत तालाबों का निर्माण, 59 हज़ार 577 कूप-रीचार्ज संरचनाओं तथा 21 हज़ार 950 से अधिक पहले से निर्मित जल संरचनाओं को पुनर्जीवित भी किया गया है। इसके साथ ही अमृत सरोवरों के निर्माण और उनके उपयोग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

नगरीय क्षेत्रों में जल संरक्षण

नगरीय क्षेत्रों में भी जल संरक्षण को लेकर व्यापक कार्य किए जा रहे हैं। नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा तालाब, कुएं और पुरानी बावड़ियों के संवर्धन, नालों की सफाई और सौंदर्यीकरण तथा रैन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की स्थापना जैसे कार्य तेजी से किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त तेज़ गर्मी को देखते हुए नगरीय निकायों द्वारा विभिन्न स्थानों पर प्याऊ की स्थापना भी की गई है। म.प्र. जन अभियान परिषद के माध्यम से राज्य में जल संरक्षण को लेकर व्यापक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में 5 लाख 25 हजार से अधिक व्यक्तियों की सक्रिय सहभागिता दर्ज की गई। साथ ही प्रदेश के विभिन्न विकासखंडों में 2 हज़ार 682 जल मंदिर (प्याऊ) स्थापित किए गए हैं। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा भी इस अभियान में व्यापक तौर पर भागीदारी की जा रही है। राज्य के हजारों विद्यालयों में जल रैलियां, निबंध, पोस्टर प्रतियोगिताएं और संवाद कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों और अभिभावकों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया है।

तकनीकी नवाचार अंतर्गत वॉटरशेड विकास कार्यों की रियल टाइम मॉनिटरिंग, ऑनलाइन स्वीकृति और मोबाइल ऐप आधारित ट्रैकिंग प्रणाली लागू की गई है, जिससे कार्यों की गुणवत्ता और प्रशासनिक पारदर्शिता भी सुनिश्चित हो रही है। वन और पर्यावरण विभाग द्वारा भी जल संरक्षण के साथ पारिस्थितिकीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए विभिन्न फील्ड गतिविधियां की जा रही हैं। नदियों के जल की गुणवत्ता का परीक्षण, जल संरचनाओं का निर्माण तथा पौधरोपण की तैयारी जैसे कार्य इसमें शामिल किए गए हैं। राज्य सरकार द्वारा सतत् मॉनिटरिंग और नियमित रूप से समीक्षा की जा रही है। इससे धरातल पर मौजूद व्यावहारिक कमियों को दूर करने में भी मदद मिल रही है। 'जल गंगा संवर्धन अभियान' से मध्यप्रदेश में जल संरक्षण की दिशा में ठोस परिणाम मिलने शुरू हो गए है। मध्यप्रदेश सरकार की यह पहल देश के दूसरे राज्यों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बनती जा रही है।

प्रकृति और स्थानीय जीवन के कल्याण प्रयासों में ही सेवा की सार्थकता -राज्यपाल श्री पटेल

राज्यपाल से भारतीय वन सेवा के प्रशिक्षु अधिकारी मिले लोकभवन में

भोपाल (एजेंसी)राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि भारतीय वन सेवा, महज प्रशासनिक दायित्व नहीं बल्कि मानवता, प्रकृति, वन्य जीव, सांस्कृतिक धरोहर और भावी पीढ़ियों के प्रति भी एक उत्तरदायित्व है। आप सभी सौभाग्यशाली है, जिन्हें जीवन भर प्रकृति की गोद में रहकर उसके संरक्षण और संवर्धन का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षु अधिकारी, वन कानूनों और जनजातीय कल्याण के प्रावधानों का गहनता से अध्ययन करें, उन्हें समझे और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप लागू करें।

प्रशिक्षण की सीख को प्रकृति, वन, वन्य जीव और स्थानीय जन जीवन की बेहतरी में उपयोग करें। उनके कल्याण प्रयासों में ही आपकी सेवा की सार्थकता है। यह याद रखें कि आपका आत्मीय व्यवहार, वंचितों के प्रति समानुभूति और संवेदनशीलता ही आपकी सफलता का अंतिम पैमाना होगी। राज्यपाल श्री पटेल सोमवार को भारतीय वन सेवा के 2024-26 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों के सौजन्य भेंट कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने सभी प्रशिक्षु अधिकारियों को अखिल भारतीय सेवा में चयन की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। लोकभवन के बैंक्वेट हॉल में आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रमुख सचिव डॉ. नवनीत मोहन कोठारी भी मौजूद थे। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि प्राकृतिक असंतुलन, पर्यावरणीय चुनौतियों आदि के कारण वन एवं वन्य जीवन के संकट का समाधान अत्यंत जरूरी है। वन

अधिकारी के रूप में पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन आपका प्राथमिक दायित्व है। इसके लिए आपकी सोच, संकल्प और सेवा का भाव सबसे जरूरी है। उन्होंने कहा कि स्थानीय लोगों के साथ हमेशा आत्मीय, सरल और सहज व्यवहार करें। अपने अच्छे व्यवहार और सहयोग से उनका विश्वास जीते। वनों की अवैधानिक कटाई, शिकार आदि समस्याओं के समाधान में स्थानीय लोगों का सहयोग प्राप्त करें। राज्यपाल श्री पटेल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की एक पेड़-माँ के नाम अभियान की चर्चा की। इसे स्थानीय सहभागिता से प्रकृति के संरक्षण और संवर्धन की सराहनीय पहल बताया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है। यहाँ की वन भूमि प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर होने के साथ हमारी गौरवशाली सभ्यता, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को भी संजोए हुए हैं। प्रदेश में विस्तृत और विश्व प्रसिद्ध वन, अनेक राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य है। मध्यप्रदेश बाघ, चीतल, तेंदुआ, गिद्ध, घड़ियाल और चीता स्टेट के रूप में प्रसिद्ध है। राज्य में गैंडा, हाथी आदि वन्य जीवों के पुनर्वास के अभूतपूर्व प्रयास भी चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि वन विभाग के वैज्ञानिक प्रबंधन प्रयासों के फलस्वरूप मध्यप्रदेश आज वन-वन्य जीव प्रबंधन में अग्रणी राज्य है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि देश में जनजातीय आबादी और वनों में मध्यप्रदेश प्रथम है। यहाँ की प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहरों को सतत-समावेशी विकास और संरक्षण के द्वारा और अधिक समृद्ध बनाना आपकी जिम्मेदारी है। जनजातीय संस्कृति, परंपराओं, विश्वास, मान्यताओं और मौलिकता के प्रति सम्मान के भाव के साथ कार्य करना, आपका नैतिक और संवैधानिक दायित्व है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समुदाय के प्राकृतिक और संवैधानिक अधिकारों के रक्षक के रूप में उनके सशक्तिकरण और कल्याण में आपकी भूमिका बहुत प्रभावी है। अपनी प्रतिभा और ज्ञान का उपयोग पर्यावरणीय चुनौतियों, जलवायु परिवर्तन, घटते वन क्षेत्र, जैव विविधता के संकटों के समाधान में करें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि आउट ऑफ बॉक्स थिंकिंग के साथ वन, वन्य जीवों और स्थानीय लोगों के संरक्षण और संवर्धन का कार्य करें। जनजातीय समुदाय की प्रकृति आधारित जीवन शैली, जड़ी-बूटियों के ज्ञान और कला की मौलिकता से आधुनिक जगत को परिचित कराएं। उनके लिए सतत आजीविका के प्रयासों में सहयोग करें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि जब भी मैदानी भ्रमण पर जाएं तो स्थानीय लोगों से उनके बच्चों की शिक्षा की जानकारी जरूर लें।

पृथ्वी दिवस विशेष- पर्यावरण व जलवायु संकट तथा धरती को बचाने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी

नई दिल्ली। हर साल एक करोड़ हेक्टेयर जंगल नष्ट हो रहे हैं, लगभग 10 लाख प्रजातियां विलुप्ति होने के खतरे में हैं और जैव विविधता रोगों के फैलाव को रोकती है। स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र जीवन के लिए जरूरी है, इसलिए हमें मिलकर छोटे-छोटे प्रयासों से पृथ्वी को बचाने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए। स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र जीवन के लिए जरूरी है, इसलिए हमें मिलकर छोटे-छोटे प्रयासों से पृथ्वी को बचाने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए।फोटो साभार- आईस्टॉक पृथ्वी दिवस हर वर्ष 22 अप्रैल को मनाया जाता है, यह दुनिया का सबसे बड़ा पर्यावरण आंदोलन है, जिसमें अरबों लोग भाग लेते हैं। इसकी शुरुआत 1970 में अमेरिका में हुई, जब लाखों लोगों ने पर्यावरण सुरक्षा के लिए आवाज उठाई और बड़े बदलाव की नींव रखी। आज पृथ्वी गंभीर संकट में है, जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जंगलों की कटाई और जैव विविधता का तेजी से नुकसान हो रहा है। हर साल लगभग 1 करोड़ हेक्टेयर जंगल खत्म हो रहे हैं और करीब 10 लाख प्रजातियां विलुप्त होने के खतरे में हैं। स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र जीवन के लिए जरूरी है, इसलिए हमें मिलकर छोटे-छोटे प्रयासों से पृथ्वी को बचाने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए। पृथ्वी दिवस हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाता है। यह दुनिया का सबसे बड़ा पर्यावरण आंदोलन बन चुका है। इस दिन का उद्देश्य लोगों को प्रकृति के महत्व के बारे में जागरूक करना और उन्हें पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रेरित करना है। आज यह दिन केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि जिम्मेदारी निभाने का संदेश भी देता है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारी धरती बहुत सुंदर है, लेकिन साथ ही बहुत नाजुक भी है।

पृथ्वी दिवस की शुरुआत साल 1970 में अमेरिका में हुई थी। उस समय पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था। एक बड़े तेल रिसाव की घटना के बाद लोगों में जागरूकता बढ़ी। 22 अप्रैल 1970 को लगभग दो करोड़ लोग सड़कों पर उतर आए और पर्यावरण की सुरक्षा की मांग की। यह एक बड़ा आंदोलन बन गया। इसके बाद कई महत्वपूर्ण कानून बनाए गए, जो हवा और पानी को साफ रखने के लिए जरूरी थे। धीरे-धीरे यह आंदोलन पूरी दुनिया में फैल गया और आज यह 190 से अधिक देशों में मनाया जाता है। पृथ्वी दिवस हमें यह समझाता है कि हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों को बचाना चाहिए। आज दुनिया कई पर्यावरण समस्याओं का सामना कर रही है। जैसे जलवायु परिवर्तन, जंगलों की कटाई, प्रदूषण और जीव-जंतुओं का खत्म होना। यह दिन हमें इन समस्याओं के बारे में सोचने और समाधान खोजने का मौका देता है। यह हमें सिखाता है कि छोटे-छोटे कदम भी बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आज प्रकृति संकट में है। समुद्र प्लास्टिक के कचरे से भरते जा रहे हैं और उनका पानी अधिक अम्लीय हो रहा है। गर्मी बढ़ रही है, जंगलों में आग लग रही है और बाढ़ जैसी आपदाएं बढ़ रही हैं। इन सबका असर लाखों लोगों पर पड़ रहा है। इंसानों की गतिविधियों जैसे ज्यादा खेती, पेड़ों की कटाई और वन्यजीवों का अवैध व्यापार भी इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक, लगभग दस लाख पशु और पौधों की प्रजातियां अब विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही हैं। हर साल लगभग एक करोड़ हेक्टेयर जंगल खत्म हो रहे हैं और करीब 10 लाख प्रजातियां विलुप्त होने के खतरे में हैं। पारिस्थितिकी तंत्र यानी हमारे आसपास का प्राकृतिक संतुलन, जीवन के लिए बहुत जरूरी है। इसमें पेड़-पौधे, जानवर, पानी और हवा सब शामिल हैं। जब यह संतुलन ठीक रहता है, तो धरती भी स्वस्थ रहती है और हम भी स्वस्थ रहते हैं। अगर हम इन तंत्रों को नुकसान पहुंचाते हैं, तो इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ता है। इसलिए इनका संरक्षण और सुधार बहुत जरूरी है। लास्टिक का कम उपयोग करना, पेड़ लगाना और कचरे को सही तरीके से निपटारा करना। अगर हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझे, तो हम मिलकर बड़ा बदलाव ला सकते हैं। साल 2026 की थीम हमारी शक्ति, हमारा ग्रह है। इसका मतलब है कि हम सब मिलकर अपने ग्रह की रक्षा कर सकते हैं। हमारे छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़ा असर डाल सकते हैं। यह थीम हमें एकजुट होकर काम करने के लिए प्रेरित करती है। पृथ्वी दिवस हमें एक महत्वपूर्ण संदेश देता है कि अगर हम अभी नहीं जागे, तो भविष्य खतरे में पड़ सकता है। हमें अपनी धरती को बचाने के लिए आज ही कदम उठाने होंगे। यह दिन हमें उम्मीद भी देता है कि अगर हम सब मिलकर काम करें, तो हम अपने ग्रह को बेहतर बना सकते हैं। हमारी पृथ्वी हमारी जिम्मेदारी है, और इसे सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है।

वन विभाग वन क्षेत्र में तीन लाख से अधिक औषधीय वृक्ष लगायेगा

इंदौर। इस बार पीपल, सागौन, जामुन, सीताफल, महुआ, आंवला, बांस, नीम, जंगलजलेबी, चिरोल, हर्रा, बहेड़ा, गूलर, कुसुम और अमलतास के पौधों के अलावा पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए संकटकालीन दुर्लभ प्रजाति के औषधीय पौधों का रोपण भी बड़े स्तर पर वन विभाग द्वारा किया जाएगा। विभाग की योजना के अनुसार इस वर्ष इंदौर, मानपुर और महू के जंगलों में 3 लाख से अधिक नए पौधे रोपने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस बार लगाये गये पौधों को दो साल पहले से ही तैयार करना शुरु कर दिया है ताकि लगाये जाने के बाद वे पेड़ का आकार ले सकें। इसमे वे पौधे लगाये जा रहे हैं जो कम पानी पर भी अपने आप को जिंदा रख पाये।

वन मंडल अधिकारी इंदौर (डीएफओ) लाल सुधाकर सिंह ने बातचीत में बताया कि इस अभियान के तहत विभिन्न रेंज में कुल 1 लाख 85 हजार पौधे सीधे तौर पर लगाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त, प्रतिस्थापन प्रक्रिया या कैजुअल्टी सुधार के अंतर्गत 82 हजार पौधे लगाए जाएंगे, जंगलों में पौधरोपण के लिए आवश्यक गड्ढे खोदने का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है। विभाग को शासकीय नर्सरी से पर्याप्त संख्या में पौधे भी प्राप्त हो चुके हैं। जिनमें पूर्व में लगाए गए कमजोर या मृत पौधों के स्थान पर नए पौधे रोपे जाते हैं। अभियान के अंतिम चरण में 60 हजार अन्य पौधे भी लगाए जाने की योजना है। पारंपरिक वृक्षारोपण के साथ-साथ सागौन जैसे पेड़ों को कलम के माध्यम से लगाने की विशेष प्रक्रिया भी अपनाई जाएगी। पौधरोपण की शुरुआत मानसून की पहली बारिश के साथ ही कर दी जाएगी। उम्मीद जताई जा रही है कि 15 जून के आसपास इंदौर में एक-दो अच्छी बारिश होने के बाद मौसम में ठंडक आएगी, जिसके तुरंत बाद यह कार्य प्रारंभ हो जाएगा। विभाग का लक्ष्य है कि जुलाई के प्रथम सप्ताह तक रोपण का अधिकांश कार्य पूर्ण कर लिया जाए इस वर्ष के अभियान की खास बात यह है कि नियमित प्रजातियों के साथ-साथ दुर्लभ प्रजातियों के पौधों पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पर्यावरण वानिकी विभाग की नर्सरी में पौधे तैयार हो चुके हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादकः डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008